A–0275

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MAJY-503

MA Jyotish (MAJY)

(पंचांग एवं मुहूर्त्त-01)

Examination, June 2025

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :— यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) 2×19=38

नोट :— खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. वेदाङ्गकालीन पञ्चाङ्ग के स्वरूप पर सुविस्तृत प्रकाश डालिए।

2. नवविधकालमान पर प्रकाश डालिए।

3. नक्षत्रसाधन के सैद्धान्तिक विधि का गणितीय उदाहरणपूर्वक वर्णन कीजिए।

4. पञ्चाङ्गनिर्माण में दृक्तुल्य के महत्त्व पर शास्त्रीयप्रमाण पूर्वक आलेख प्रस्तुत कीजिए।

5. सौर, आर्य एवं ब्राह्मपक्षीय पञ्चाङ्गों पर चर्चा करते हुए पञ्चाङ्गसुधार पर शास्त्रीय दृष्टि से विचार प्रस्तुत कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट :— खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्न पर टिप्पणियाँ प्रस्तुत कीजिए :

   (क) भद्राकरण

   (ख) आनन्दादियोग

2. तिथिगणना की सैद्धान्तिक उपपत्ति प्रस्तुत कीजिए।

3. नक्षत्रों के स्वामी एवं ध्रुवादि गणों को लिखिए।

4. चर एवं स्थिर करणों को विस्तार से प्रस्तुत कीजिए।

5. वारक्रम गणना पर प्रकाश डालिए।

6. पञ्चाङ्गनिर्माण की परम्परा में आचार्य केतकर के अवदान पर समीक्षा प्रस्तुत कीजिए।

7. कल्पित उदाहरणपर्वूक योगसाधन की विधि प्रस्तुत कीजिए।

8. पञ्चाङ्गनिर्माण में ग्रहलाघव करणग्रन्थ के योगदान पर विमर्श प्रस्तुत कीजिए।

****